INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा मैं किन्नर विमर्श

रजनी रानी

(एम.फिल) शोधार्थी
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
Email: rajniraniugc@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2021-14551199/IRJHIS2107009

शोध सारांश :

मानव समाज दो स्तंभों पर खड़ा है स्त्री और पुरुष । जिसमें दोनों के सहारे मानव प्रजाति आगे बढ़ रही है। मानव जाति की आदिम सभ्यता से ही समाज का संपूर्ण विकास इन्ही दो लिंगो के कारण ही हो रहा है लेकिन हमारे समाज में मानव प्रजाति के इन दो लिंगों के अतिरिक्त एक और लिंग का अस्तित्व है जिसे हमारा समाज किन्नर, तृतीयपंथी, उभयलिंगी, थर्ड जेंडर इत्यादि नामों से संबोधित करता । भारतीय संविधान में किन्नर समुदाय को एक समान नागरिक अधिकार प्राप्त हैं उन्हें सरकार ने तृतीयलिंगी श्रेणी में रखा है। किन्नर बच्चों की नियति तो शारीरिक मानसिक रूप से विकलांग रह जाने वाले बच्चों से भी गयी- गुजरी होती है। निर्दोष होने पर भी बारंबार अपने परिवार से मिलने वाली उपेक्षा और लक्षण से बहुधा किन्नर लोग अंदर ही अंदर टूटते बिखरते रहते हैं । यह वास्तविकता ही है कि किन्नर समुदाय के लोगों को उनके किन्नर होने के कारण ही वह समाज से तिरस्कृत बहिष्कृत हैं।

प्रस्तावना:

वर्तमान समय में भारत ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर किन्नरों एवं समलैंगिकों पर विमर्श होने लगे हैं । विमर्श का एक बड़ा आधार साहित्य के अतिरिक्त सोशल मीडिया रहा है जिसने किन्नर को एक नए अस्तित्व और पहचान के साथ मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है फिर वह चाहे टीवी हो, प्रिंट मीडिया हो, यूट्यूब, डॉक्यूमेंट्री या अन्य कोई संचार माध्यम हो जिसने वर्षों पुराने छिपे यथार्थ को लोगों के सामने रखा है। लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, मानोबी बंदोपाध्याय जैसे किन्नर समुदाय आज अपनी कहानी स्वयं लोगों के सामने रखने लगे हैं जिसके परिणाम स्वरूप लोगों का ध्यान उस वर्ग की ओर आकर्षित हुआ जिसे अब तक समाज से बहिष्कृत और तिरस्कृत

किया जाता रहा है। लोगों के आकर्षित होने से एक बड़ा लाभ जो इस वर्ग को पहुंचा वह यह है कि लोगों ने उन्हें इनके अस्तित्व और पहचान को लेकर बात करनी शुरू की जिसका परिणाम "किन्नर विमर्श" के रूपमें आज हमारे सामने है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है । जब देश में समावेशी विकास की बात की जाती है तो केवल जाति और लिंग को आधार बनाकर दलित पिछड़े और स्त्री के विकास की बात की जाती हैं किंतु किन्नरों की नहीं, जबकि किन्नर समुदाय भी स्पृश्यता और लैंगिक आधार पर अनेक वंचनाओं और प्रवंचनाओ से पीड़ित है। हमारे लोकतांत्रिक देश एवं सभ्य समाज के लिए यह अत्यंत लज्जाजनक है कि एक किन्नर व्यक्ति के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से जितना घृणित व्यवहार किया जाता है उतना शायद मनुष्य किसी पशु से भी ना करता हो। एक किन्नर होने की जो सजा इन्हें मिलती है वह क्रूर ही नहीं वरन क्रूरतम सजा है। इन्हीं कारणों से एक किन्नर मनुष्य संपूर्ण समाज के सामने अपनी मानवीय संभावनाओं और पहचान से मुखातिब नहीं हो पाता। इस क्रूर मजाक के कारण ही किन्नरों का पूरा जीवन सभी पारिवारिक सुख से वंचित रह जाता है जीवन भर खुशी की तलाश में अगर कोई किन्नर जश्न मनाते हैं तो वह इस नारकीय जीवन से छुटकारा पाने के लिए ही मनाते हैं। जिस तरह स्त्री और पुरुष एक समाज में रहते हैं उसी तरह इस दुनिया में किन्नरों का अपना एक समाज है मनुष्य जाति की तरह ही किन्नरों में भी दो प्रकार होते हैं एक किन्न पुरुष और दूसरी किन्न स्त्री । किन्नर जीवन पर आधारित सभी उपन्यास स्त्री केंद्रित है लेकिन पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा उपन्यास पुरुष केंद्रित है।

चित्रा मुदगल जी द्वारा रचित "पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा" वर्ष 2018 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत एक सशक्त एवं प्रसिद्ध उपन्यास है । यह उपन्यास पत्रात्मक शैली में लिखा गया है जिसमें मां और पुत्र के बीच संवाद पत्रों के माध्यम से चलता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र विनोद है जो जननांग दोषी है। इस दोष के कारण ही वह उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक मानवीय संवेदनाओं से ग्रसित रहता है । सत्रह पत्रों के माध्यम से लगभग पाँच महीने यह कथा मानो किन्नर समुदाय की पूरी जीवन गाथा कहती है जिसमें भावुकता भी है, व्यंग्य भी है, व्यथा भी है, अनुमान भी है, प्रश्न भी है इन सभी के माध्यम से उपन्यास विस्तृत आकार लेता है। इस उपन्यास में परिवार एवं समाज द्वारा बहिष्कृत किन्नरों की जीवन की व्यथा कथा है जिन्हें मात्र एक शारीरिक कमी जिनमें उनका कोई दोष नहीं होने के कारण समाज द्वारा अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश कर दिया जाता है। संपूर्ण उपन्यास एक किन्नर बेटे और मां के आपसी पत्र व्यवहार के माध्यम से किन्नरों के दुख दर्द एवं उनके संघर्षपूर्ण जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति है । उपन्यास का शीर्षक अपने में पूरे उपन्यास की संवेदना छिपाए है। उपन्यास में मां वंदना बेन को अपने पुत्र विनोद से पत्राचार के लिए उन्हें अपने घर के पास के पोस्ट ऑफिस से अपना निजी पोस्ट बॉक्स नंबर लेना पड़ता है और उसी पोस्ट बॉक्स नंबर पर आधारित है इस उपन्यास का शीर्षक पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा । इस उपन्यास में लिंग दोषी समाज की समस्या को अत्यंत मानवीय दृष्टि से उठाया गया है ।

यह उपन्यास एक मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चे विनोद के जीवन की कहानी है जो जन्म से ही जननांग की विकृति का शिकार है। इस कमी के कारण ही उसे न चाहते हुए भी किन्नर समुदाय की गुरु चंपाबाई के हाथों मासूम

बकरी सा सौप दिया जाता है। वह कहता भी है – "किन्नर जीवन एक अंधा कुआं है इसमें सिर्फ सांप बिच्छू रहते हैं सांप बिच्छू बनकर पैदा नहीं हुए होंगे बस उन्हें आदमी नहीं रहने दिया" (1) उसके दोनों भाई सामान्य हैं विनोद के पिता की अच्छी चलती किराने की दुकान है और मां वंदना उसकी शारीरिक विकृति के कारण ही उसके प्रति कुछ अधिक मोहविष्ठ हैं। कुछ बड़ा होने पर साथ के बच्चों के साथ खेलने पर उसे भी अपनी इस शारिरिक न्यूनता का बोध होता है।एक दिन ऐसे ही बच्चों के साथ खेल कर लौटने के बाद वह मां से पूछता है- "मेरे नुन्नु क्यों नहीं हैबा" (2) यह सवाल ही इस उपन्यास का केंद्रीय सवाल है जो विनोद के माध्यम से इस उपन्यास के साथ ही पूरी सामाजिक संरचना के आगे अपने भयावह आकार में खड़ा होकर बढ़ता जाता है। किन्नर बच्चों की नियति तो शारीरिक मानसिक रूप से विकलांग रहे जाने वाले बच्चों से भी गयी- गुजरी होती हैं। लोग किन्नरों के साथ अछूतों का सा व्यवहार करते हैं। एक किन्नर व्यक्ति को बचपन से ही प्रेम और सहानुभूति के बदले उपेक्षा, तिरस्कृत, और घृणा ही मिलती हैं- "जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम धड़ का मात्र वहीं निचला हिस्सा भर हो। मस्तिष्क नहीं हो, दिल नहीं हो ,धड़कन नहीं हो , आंख नहीं हो, तुम्हारे हाथ पैर नहीं हैं। हैं, हैं, सब वैसा ही है जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने -देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं सोचो" (3)

विस्थापन हर मनुष्य के लिए दुखदाई होता है। किन्नरों के तो जीवन का सत्य ही होता है परिवार से विस्थापन और जीवन भर उनकी याद में तड़पना । व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी का नाम परिवार है। यह कड़ी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार में ही मनुष्य पैदा होता है ,पलता है, और बड़ा होता है, परिवार से समाज, समाज से देश और देश से विश्व संचालित है। विनोद गुजराती परिवार से है वह मुंबई में अपने परिवार के साथ रहता है विनोद अपनी मां का दूसरा बेटा है उसके दोनों भाई सामान्य है बस विनोद ही है जो असामान्य है। माता-पिता तीनों बच्चों का पालन समान रूप से ही करते है। परिवार द्वारा अथक प्रयास करते रहने पर भी अंततः सच्चाई घर के बाहर आ ही जाती हैं। चौदह बरस तक छुपाने की बहुत कोशिशों के बाद भी चंपाबाई और उसके साथी आकर जबरन विनोद को अपने साथ ले जाते हैं। जहां उसे भीषण यंत्रणा में बिरादरी के नियम व कानून सिखाए जाते हैं। इस घटना से विनोद का जीवन बदल जाता है।व्यापक परिवर्तन का मार्ग एक छोटी शुरुआत से होकर ही निकलता है तो पहल घर से ही होनी चाहिए- "जरूरत है सोच बदलने की। संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी, तभी अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें घूरे में नहीं फेकेंगे। ट्रांसजेंडर के खांचे में नहीं ढकेलेंगे। (4)

शिक्षा वह दीपक है रोशनी से हम अपने जीवन व समाज में उजाला कर सकते हैं। इस उपन्यास का पात्र विनोद किन्नर होते हुए भी आठवीं कक्षा का अंग्रेजी भाषा का मेधावी और कुशाग्र बुद्धि का छात्र है। किन्नर समुदाय के प्रत्येक किन्नर को भी वह शिक्षित करने का प्रयास करता है।उसे किन्नरों की तरह ताली पीटना, मेकअप करना, चटक मटक कर चलना अच्छा नहीं लगता। अपने पत्र में वह कहता भी है- "उनकेलात, घूंसे, थप्पड़ और कानों में गर्म तेल से टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमे सितारे वाली साड़ियां लपेट लिपस्टिक लगा कानों में बुंदे लटकाने को" (5) वह पढ़

लिख कर अपनी इच्छा अनुसार सामान्य जीवन जीना चाहता है। उसकी शिक्षा और उसकी संस्कार उसे अपने पैरों पर खड़ा हो उसे स्वाभिमान की जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करते हैं, सक्षम बनाते हैं। किन्नरों की बिरादरी में रहते हुए भी शिक्षा के प्रति उसकी उत्कट कामना उसे आगे चलकर शिक्षकों की तरह नौकरी मुहैया करती है । विनोद पूनम जोशी से कहता भी है – "पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है, कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया हमारे लिए" (6)

इस उपन्यास में किन्नरों पर होने वाले यौन अत्याचारों और बलात्कारों को भी शामिल करने का प्रयास किया गया है। किन्नरों के साथ होने वाले इस तरह की यौन हिंसा पर प्राय: पुलिस भी कोई कार्यवाही नहीं करती दिखती। वास्तव में तो किन्नर देह ही पुलिस के लिए भी मन बहलाव का खिलौना मात्र होती है। किन्नरों के साथ होने वाले बलात्कार और यौन हिंसा की घटना में पूनम जोशी के साथ स्थानीय विधायक जी का भतीजा बिल्लू और उसके दोस्त नशे में आकर चाकू-कांटे से उसके छेद का ऑपरेशन करके उसके साथ बारी - बारी से बलात्कार करते हैं । इंसानियत की सारी हदें पार करने पर उतर आते हैं । उत्तर प्रदेश के हाथरस बलात्कार कांड से कम भयावह नहीं है हिजड़ा पूनम के साथ की गई यौन हिंसा ।"विधायक जी के बिल्लू भतीजे ने छेद का ऑपरेशन शुरू कर दिया।
चाकू- कांटा मुस्तैद हो आए।
दीमक का बाम्बियां बनाता – रिश्ता खून फर्श पर आड़े – तिरछे बहने लगा ।"(7)

पूनम के साथ जब यह घटना घटित होती है तो उस समय विनोद चंडीगढ़ में होता है। दिल्ली आने पर विनोद को इस घटना के बारे में जब पता चलता है तो वह क्रोध व आक्रोश से भर जाता है । साथ ही वह अपनी मां के बीमारी की सूचना से दुखी हैं। वह पूनम को न्याय दिलाने के लिए अपराधियों को सजा दिलाना चाहता है परंतु पूनम उसे अपनी मां के पास जाने के लिए विवश करती हैं ।विधायक जी विनोद को मुंबई जाने की सलाह देते हुए फ्लाइट की टिकट करा देते हैं पर वह मुंबई नहीं पहुंच पाता है ।इसका जिक्र लेखिका ने समाचार दो में इस प्रकार स्पष्ट किया है - "मुंबई27 दिसंबर। कुर्ला । कलीना कॉन्प्लेक्स से लगी हुई मिठी नदी में पुलिस ने एक किन्नर की फूली लाश बरामद की है" (8) समाचार एक में विनोद की मां की मृत्यु की सूचना दी जाती है जो अपनी भूल को क्षमा कर विनोद से घर आने की विनती करती हैं । (9)

किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए विनोद प्रयासरत है एक राजनीतिक पार्टी का हिस्सा बनने के बाद वह उस मंच का उपयोग किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए करता है । "आरक्षण निदान नहीं है आत्मचेतना बुनियादी अधिकारों की मांग का पहला पायदान है।"(10) किन्नरों को जागरूक करते हुए तथा समाज के लोगों को चेतावनी देते हुए वह कहता है –"किन्नरों की थर्ड के नीचे लिंग न सही, धड़के ऊपर मस्तिष्क भी नहीं है, यह कैसे सोच लिया आपने ?" (11) यह वक्तव्य दर्शाता है कि किन्नर भी हमारी तरह इंसान हैं उनके अंदर भी भावनाएं हैं । इस उपन्यास में लेखिका ने किन्नरों के साथ पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में होने वाले अन्याय का यथार्थ मार्मिकता से अंकन किया है। विधायक की किन्नरों की समस्याओं को जीत का हत्या समझ उसे राजनीतिक मुद्दा बनाकर विनोद को किन्नर समुदाय के लिए आरक्षण की मांग उठाने के लिए उकसाते हैं किंतु विनोद आरक्षण पर बात न उठाकर किन्नरों के स्वाभिमान को जगाने तथा उनके अधिकारों एवं उनकी घर वापसी की बात पर जोर डालता है ।उसे

किन्नरों के लिए आरक्षण नहीं बल्कि समाज की सहानुभूति और मनुष्य होने का अधिकार चाहिए। उसका मानना है कि उन्हें वह स्थान दिया जाए "जहाँ सरकारने अनुसूचित जाति को रखा है, पिछड़ा वर्ग को रखा है , विकलांग को रखा है और बहुतों को रखा है। लिंगदोषी सभी लिंग से स्त्री- पुरुष नहीं है तो क्या मनुष्य नहीं है ? किन्नरों का संघर्ष उन्हें मनुष्य मने का संघर्ष है।" (12) उन्हें अलग मानना अमानवीय है।

इस प्रकार यह उपन्यास विभिन्न आयामों को छूता है। इस उपन्यास में किन्नरों से जुड़ी तमाम समस्याएं जैसे उनकी यौन समस्या, समाज का किन्नरों के प्रति रवैया, शिक्षा की समस्या, स्वयं किन्नरों की हीन भावना आदि को लेखिका उपन्यास में दिखाती है। यह उपन्यास निश्चित तौर पर हिंदी उपन्यास जगत में अपना अलग वजूद कायम करने में सफल हुआ है। आवश्यकता है समाज में व्यापक परिवर्तन लाने की , पारंपरिक सोच से मुक्त होने की । यह उपन्यास किन्नर के जीवन को एक नई दृष्टि से समझने और जानने के साथ-साथ उनके जीवन को संवारने के लिए बेहतर विकल्प की आशा और विश्वास से भरा हुआ अनूठा उपन्यास है ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा, चित्रा मुदग, पृष्ठ संख्या 11, संस्करण 2018, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली ।
2. वही, पृष्ठ संख्या 13
3. वही, पृष्ठ संख्या 50
4. वही, पृष्ठ संख्या 112
5. वही, पृष्ठ संख्या 9
6. वही, पृष्ठ संख्या 110
7. वही, पृष्ठ संख्या 204
8. वही, पृष्ठ संख्या 224
9. वही, पृष्ठ संख्या 223
10. वही, पृष्ठ संख्या 187
11. वही, पृष्ठ संख्या 193
12. वही, पृष्ठ संख्या 195

अन्य सहायक ग्रंथ -

1. थर्ड जेंडर विमर्श, सम्पादक शरद सिंह, संस्करण 2019, भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली।
2. थर्ड जेंडर और साहित्य, सम्पादक एम. फीरोज खान, संस्करण 2018, विकास प्रकाशन, कानपुर।
3. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श, मधु खराटे, संस्करण 2018, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
4. हिंदी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, संपादक विजेंद्र प्रताप सिंह, संस्करण 2017, अमन प्रकाशन, कानपुर।